प्रश्न पत्र ब्लूप्रिन्ट

BLUE PRINT OF QUESTION PAPER

कक्षा :– XII　　　परीक्षा : हायर सेकेण्डरी　　　पूर्णांकः– 100

विषयः– पुस्तपालन एवं लेखाकर्म　　　समय – 3 घंटे

स. क्र.	इकाई	इकाई पर आवंटित अंक	वस्तुनिष्ठ प्रश्न खण्ड (अ)	अंकवार प्रश्नों की संख्या खण्ड (ब)			कुल प्रश्न
			1 अंक	4 अंक	5 अंक	6 अंक	
1	प्रेषण लेखे	10	5	–	1	–	1
2	साझेदारी लेखे	07	3	1	–	–	1
3	साझेदारी का पुनर्गठन	08	3	–	1	–	1
4	नये साझेदारी का प्रवेश एवं निवृत्ति	10	5	–	1	–	1
5	साझेदारी फार्मो का समापन (विघटन)	10	4	–	–	1	1
6	अंशपूंजी लेखे	15	–	1	1	1	3
7	ऋण पत्र संबंधी लेखे	15	5	1	–	1	2
8	कम्पनी का वित्तीय विवरण	05	–	–	1	–	1
9	वित्तीय विवरणों का विश्लेषण	10	–	1	–	1	2
10	वित्तीय स्थिति में परिवर्तन सूचक विवरण	10	–	1	–	1	2
	योग =	100	25	05	05	05	15 + 5 = 20

निर्देश :–

1. प्रश्न क्रमांक 1 से 5 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न होगें जिसके अन्तर्गत रिक्त स्थानों की पूर्ति, एक शब्द में उत्तर, मेचिंग, सही विकल्प तथा सत्य असत्य का चयन आदि के प्रश्न होगें । प्रत्येक प्रश्न में 5 अंक निर्धारित है ।
2. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को छोड़कर सभी प्रश्नों में विकल्प का प्रावधान रखा जाये । यह विकल्प समान इकाई से तथा यथा संभव समान कठिनाई स्तर वाले होने चाहिए ।
3. कठिनाई स्तर – 40% सरल प्रश्न, 45% सामान्य प्रश्न, 15% कठिन प्रश्न

प्रादर्श प्रश्न पत्र

Book Keeping & Accounts

पुस्तपालन एवं लेखाकर्म

समय 3 घंटे | कक्षा XII | पूर्णांक 100

निर्देश :I सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।
II प्रश्न क्र. 1 से 5 तक वस्तुनिष्ठ है । प्रत्येक प्रश्न के लिये 5 अंक निर्धारित हैं ।
III प्रश्न क्रमांक 6 से 10 तक प्रत्येक प्रश्न 4 अंक ।
IV प्रश्न क्र. 11 से 15 तक प्रत्येक प्रश्न 5 अंक ।
V प्रश्न क्र. 16 से 20 तक प्रत्येक प्रश्न 6 अंक ।
VI प्रश्न क्र. 6 से 20 तक सभी प्रश्नों में आन्तरिक विकल्प दिये गये है ।

प्रश्न–1 सही शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए – (5)

1. प्रेषण में विक्रय विवरण -------- द्वारा तैयार होता हैं ।
2. साझेदारी संलेख के अभाव में साझेदारों के मध्य लाभ–हानि का बंटवारा ---------- अनुपात में होता हैं ।
3. संयुक्त जीवन बीमा पालिसी यदि व्यवसाय के लिये खर्चा है तो इसके प्रीमियम को -------- खातें में दर्शायेंगे ।
4. साझेदारी फर्म के समापन पर सम्पत्तियों को -------- खाते में स्थानांतरित कर बन्द कर दिया जाता है ।
5. परिवर्तन शील ऋण पत्र को -------- में परिवर्तित किया जा सकता हैं ।

प्रश्न–2 निम्न में से सत्य / असत्य लिखियें :– (5)

1. प्रेषण व्यवहार में प्रेषित माल पर स्वामित्व प्रेषक का होता हैं ।
2. साझेदारी संलेख के अभाव में साझेदारों के मध्य लाभ हानि का विभाजन पूंजी के अनुपात में होता हैं ।
3. यदि साझेदार की मृत्यु हो जाती है तो उसकी देय राशि का भुगतान उसके उत्तराधिकारी को की जाती हैं ।
4. वसूली खाते का शेष साझेदारों के मध्य पूंजी के अनुपात में बांटा जाता हैं ।
5. ऋण पत्रों पर केवल लाभ होने पर ही ब्याज दिया जाता हैं ।

प्रश्न–3 एक शब्द में उत्तर दीजिए :– (5)

1. प्रेषण व्यवहार में भेजे गये माल पर जोखिम किसका होता है ?
2. साझेदारी व्यवसाय में न्यूनतम सदस्य संख्या कितनीं होतीं हैं ?
3. ख्याति किस प्रकार की सम्पत्ति हैं ?
4. साझेदारों के जींवन पर संयुक्त जींवन बीमा पालिसी क्यों लीं जातीं हैं ?
5. वे ऋण पत्र जिनका कम्पनीं के रजिस्टर में नाम दर्ज होता है उन्हें क्या कहा जाता हैं ?

प्रश्न–4 सहीं जोड़े बनाइयें – (5)

	कालम – अ		कालम – ब
1.	अभिभावीं कमीशन का भुगतान किया जाता हैं ।	–	औसत लाभ – सामान्य लाभ
2.	अधिलाभ	–	बीजक मूल्य से अधिक मूल्य पर माल को बेचने पर ।
3.	पुर्नमूल्यांकन खाता बनाया जाता हैं	–	फर्म के समापन पर खोला जाता हैं
4.	वसूलीं खाता	–	कम्पनीं के प्रबन्ध में भाग नहीं ले सकता हैं ।
5.	ऋण पत्र धारीं	–	सम्पत्ति एवं दायित्वों के मूल्य में परिवर्तन होने पर ।

प्रश्न–5 सहीं विकल्प चुनकर लिखियें – (5)

1. प्रेषित माल का लागत मूल्य 16500 रू, किन्तु बीजक मूल्य लागत मूल्य से 10% अधिक है, प्रेषित माल का बीजक मूल्य होगा –

   (अ) 18050 (ब) 18250

   (स) 11850 (द) 18150

2. साझेदारीं का पुनगर्ठन किस दशा में होता है –

   (अ) नये साझेंदार के प्रवेश पर (ब) साझेदार के निवृत्ति पर

   (स) साझेदार कीं मृत्यु पर (द) उपरोक्त सभीं

3. पुर्नमूल्यांकन पर होने वाला लाभ किस अनुपात में बॉटा जाता हैं –

(अ) नया लाभ हानि अनुपात (ब) पुराने लाभ हानि अनुपात

(स) त्याग अनुपात (द) प्राप्ति अनुपात

4. फर्म के समापन पर खोला जाता है –

(अ) वसूली खाता (ब) पुर्नमूल्यांकन

(स) लाभ हानि खाता (द) उपरोक्त में से कोई नहीं ।

5. ऋण पत्र धारी कम्पनी के होते हैं –

(अ) स्वामी (ब) लेनदार

(स) देनदार (द) संचालक

प्रश्न–6 स्थिर एवं परिवर्तन शील पूंजी खाता में चार अन्तर लिखिए ? (4)

अथवा

1 जनवरी 2007 को अ और ब बिना किसी समझौते के साझेदार है वे क्रमशः 20000 रू. और 10000 रू. पूंजी लगाते है । 31 अगस्त 2007 को अ बिना किसी ब्याज के समझौते के फर्म को 4000 रू. ऋण देता है । वर्ष 2007 का लाभ हानि लेखा 4000 रू. लाभ दर्शाता है । साझेदार ब्याज एवं लाभ विभाजन के प्रश्न पर सहमत नहीं हैं । लाभ हानि नियोजन खाता बनाइयें ?

प्रश्न–7 साधारण अंश एवं पूर्वाधिकार अंश में चार बिन्दुओं पर अन्तर लिखिए ? (4)

अथवा

एक कम्पनी ने 10 रू. वाले 15000 समता अंश जनता को निर्गमित दिये । सम्पूर्ण राशि एवं मुश्त प्राप्त हो गयी ।

कम्पनी की पुस्तकों में आवश्यक पंजी प्रविष्टी कीजिए ?

प्रश्न–8 सुरक्षित ऋण पत्र एवं असुरक्षित ऋण पत्र को समझाइयें ? (4)

अथवा

सुरभी लिमिटेड ने 100 रू. वाले 4000, 20% ऋण पत्र 10% प्रीमियम पर निर्गमित किये । सम्पूर्ण राशि एक साथ प्राप्त हो गयी । पंजी प्रविष्टी कीजियें ।

प्रश्न–9 वित्तीय विश्लेषण के कोई चार उद्देश्य लिखिए ? (4)

अथवा

तरलता का अनुपात किसे कहते है? इसके अनतर्गत कौन से अनुपात की गणना की जाती हैं ?

प्रश्न–10 रोकड़ प्रवाह विवरण किसे कहते हैं ? (4)

अथवा

रोकड़ के स्त्रोत की विभिन्न मदें कौन सी हैं ।

प्रश्न– 11 सचिन ड्रग हाउस, मुम्बई ने 35 पेटियां दवाई की सौरभ ड्रग हाउस कोलकता को 8400 रू. बीजक मूल्य पर भेजी । बीजक मूल्य लागत मूल्य से 20% अधिक था । उन्होंने गाड़ी भाड़ा एवं रेल किराया के 700 रू. चुकायें । मार्ग में 5 पेटी खो गयी और रेलवे कम्पनी ने 1000 रू0 हर्जाना के चुकायें । प्रेषति ने शेष पेटियों की सुर्पुदगी ली और उस पर 420 रू. व्यय हुये । प्रेषित ने विक्रय विवरण भेजकर 7500 रू. में 25 पेटियों के विक्रय की सूचना दी । उनके द्वारा 600 रू. विक्रय व्यय हुआ । वे कुल विक्रय पर 5% कमीशन के अधिकारी हैं ।

प्रेषक के यहॉ प्रेषण खाता एवं असामान्य हानि खाता बनाइयें ? (5)

अथवा

प्रेषक दर्शनार्थ बीजक में लागत से अधिक मूल्य क्यों दर्शाता है ? इस संबंध में कौन कौन सी समायोजन प्रविष्टि की जाती हैं ?

प्रश्न– 12 एक फर्म ने 10000 रू. 6000 रू0, 12000 रू. व 18000 रू. लाभ गत चार वर्षो में अर्जित किये । फर्म में 60000 रू. पूंजी विनियोग किया गया । इस पूंजी पर 12% प्रतिवर्ष की दर से आप अपेक्षित है । ख्याति की गणना अधिलाभ के तीन वर्ष के क्रय के आधार पर की जाना है । अधिलाभ विधि द्वारा ख्याति की गणना कीजियें । (5)

अथवा

फर्म का पुनर्गठन किन दशाओं में हो सकता है ?

प्रश्न– 13 अ और ब का दिनांक 31 दिसम्बर 2007 की स्थिति में चिट्ठा निम्नलिखित था ।

चिठ्ठा

लेनदार	10,000	बैंक	10,000
देय विपत्र	2,000	देनदार	12,000
बैंक ऋण	8,000	फर्नीचर	4,000
सामान्य कोष	6,000	भवन	25,000
पूंजी अ (A)	20,000	यंत्र	10,000
ब (B)	15,000		
	61,000		61,000

निम्न शर्तो पर स को साझेदारी में प्रवेश दिया गया –

1. स 12000 रू. पूंजी लायेगा उसे भविष्य में ¼ भाग मिलेगा ।
2. फर्म में 10000 रू. से ख्याति खाता खोला जायेगा ।
3. भवन पर 10% वृद्धि की जावेगी ।
4. फर्नीचर एवं यंत्र पर 10% ह्रास लगाया जायेगा
5. देनदारों पर 10% संदिग्ध ऋण संचिति का निर्माण किया जायेगा ।

पूर्नमूल्यांकन खाता एवं साझेदारों के पूंजी खाते बनाइयें । (5)

अथवा

फर्म से अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार को दी जाने वाली राशि की गणना किस प्रकार की जाती हैं ?

प्रश्न– 14 एक कम्पनी ने 100 रू. वाले 5000 समता अंश 10% प्रीमियम पर निर्गमन किये । आवेदन के समय 50 रू. तथा शेष राशि आवंटन के समय मंगवायी गई । आवंटन की राशि प्रीमियम सहित हैं । सम्पूर्ण राशि प्राप्त हो गयी । कम्पनी की पुस्तकों में आवश्यक पंजी प्रविष्टी कीजिए ? (5)

अथवा

अंशों के हरण से क्या आशय हैं ? अंशों के हरण के लिये कम्पनी द्वारा क्या कार्यवाही की जाती हैं ?

प्रश्न– 15 कम्पनी की अंश पूंजी का विभाजन कितने प्रकार से होता हैं वर्णन कीजिए । (5)

अथवा

कम्पनी के चिठ्ठा में चालू दायित्व एवं प्रावधान के अन्तर्गत कौन सी मदें सम्मिलित होतीं हैं ?

प्रश्न– 16 वसूली खाता एवं पुर्नमूल्यांकन खाता में क्या अन्तर है ?

अथवा

अ और ब ने 31 दिसम्बर 2007 को अपने व्यवसाय का समापन करने का निर्णय किया उस तिथि को उनका चिठ्ठा निम्न था –

दायित्व	राशि	सम्पत्ति	राशि
लेनदार A का ऋण सामान्य संचय पूंजी A 20000 B 40000	10,000 18,000 6,000 60,000	रोकड़ देनदार विविध सम्पतियां ख्याति	8,000 13,000 68,000 5,000
	94,000		94,000

साझेदार पूंजी के अनुपात में लाभ हानि विभाजन करते है, ख्याति से 6000 रू. वसूल हुए, लेनदारों को 5% कटौती पर भुगतान किया । विविध सम्पत्तियों से 63000 रू. एवं देनदारों से 8000 रू. वसूल हुए । समापन की लागत 500 रू. हैं । वसूली खाता बनाइयें ।

प्रश्न– 17 अंशों का बट्टा पर निर्गमन से क्या आशय है । अंशों के बट्टा पर निर्गमन के क्या नियम हैं ? (6)

अथवा

एक कम्पनी ने 10 रू. वाले (पूर्ण रूप से मागे गये) 100 समता अंशों का जिन पर 400 रू. चुकाये गये थे, कम्पनी के संचालकों ने हरण कर लिया तथा उनमें से 40 अंशों का 300 रू. के भुगतान पर पुनर्निगर्मित किया । अंशों के हरण एवं पुनर्निर्गमन सम्बन्धी पंजी प्रविष्टी कीजिए ?

प्रश्न–18 ऋण पत्रों की विशेषतायें लिखिए ? (6)

अथवा

अतुल लिमिटेड ने 100 रू. वाले 5000, 10% ऋण पत्र 5% कटौती पर निर्गमन किये । इन पर 30 रू. आवेदन पर एवं शेष आवंटन पर देय थे ।

समस्त राशि प्राप्त हो गयी । कम्पनी की पुस्तकों में पंजी प्रविष्टी कीजियें ।

प्रश्न–19 अनुपात विश्लेषण के कोई 6 उद्देश्य लिखियें । (6)

अथवा

निम्न सूचनाओं के आधार पर सकल लाभ अनुपात ज्ञात कीजिए ।

सकल बिक्री	–	4,50,000 रू.
बिक्री वापसी	–	25,000 रू.
शुद्ध लाभ , ब्याज एवं अप्रत्यक्ष व्यय घटाने के पश्चात्	–	95,000 रू.
अप्रत्यक्ष व्यय	–	25,000 रू.
ब्याज	–	5,000 रू.

प्रश्न– 20 रोकड़ प्रवाह विवरण के कोई 6 उद्देश्य लिखिए – (6)

अथवा

एक कम्पनी के वर्ष 2006 एवं वर्ष 2007 के चिठ्ठे निम्न हैं :–

दायित्व	2006	2007	सम्पत्ति	2006	2007
पूंजी	4,00,000	2,00,000	भवन	3,00,000	2,40,000
लेनदार	40,000	30,000	मशीनरी	60,000	50,000
देय विपत्र	5,000	4,000	देनदार	30,000	28,000
लाभ हानि खाता	1,00,000	2,00,000	स्टाक	55,000	76,000
			रोकड़	1,00,000	40,000
	5,45,000	4,34,000		5,45,000	4,34,000

उपरोक्त जानकारी के द्वारा संचालन से रोकड़ की गणना कीजियें ।

––––––

प्रादर्श उत्तर

Book Keeping & Accounts

पुस्तपालन एवं लेखाकर्म

समय 3 घंटे | कक्षा XII | पूर्णांक 100

उत्तर–1 सही शब्दों से रिक्त स्थान की पूर्ति – (5)

I प्रेषणी

II बराबर

III लाभ हानि खाता

IV वसूली खाता

V अंश पत्र

उत्तर–2 सत्य / असत्य – (5)

I सत्य

II असत्य

III सत्य

IV असत्य

V असत्य

उत्तर–3 (5)

I प्रेषक

II दो

III स्थायी सम्पत्ति

IV साझेदार को देय राशि की व्यवस्था

V रजिस्टर्ड ऋण पत्र

उत्तर–4 सही जोड़ियां: (5)

I अधिभावी कमीशन का भुगतान किया जाता हैं ।
बीजक मूल्य से अधिक मूल्य पर माल बेचने पर

II अधिलाभ = औसत लाभ – सामान्य लाभ

III पुर्नमूल्यांकन खाता बनाया जाता है –

सम्पत्ति एवं दायित्वों के मूल्य में परिवर्तन होने पर ।

IV वसूली खाता – फर्म के समापन पर खोला जाता हैं

V ऋण पत्रधारी – कम्पनी के प्रबन्ध में भाग नहीं ले सकता हैं ।

उत्तर–5 सही विकल्प : (5)

I (द) 18150

II (द) उपरोक्त सभी

III (ब) पुराने अनुपात में

IV (अ) वसूली खाता

V (ब) लेनदार

उत्तर–6 स्थिर एवं परिवर्तनशील पूंजी खाता में अन्तर – (4)

	अन्तर का आधार	स्थिर पूंजी खाता	परिवर्तनशील पूंजी खाता
1	शेष	स्थिर पूंजी खाता का शेष सदैव क्रेडिट होता है ।	परिवर्तन पूंजी खाता का शेष डेबिट अथवा क्रेडिट हो सकता है ।
2.	मदें	इसमें केवल पूंजी का लेखा करते हैं ।	इसमें पूंजी के साथ साझेदार से संबंधित अन्य मदों का लेखा किया जाता है ।
3.	पूंजी की स्थिरता	इसमें पूंजी हमेशा स्थिर रहती हैं	इसमें पूंजी की राशि सदैव परिवर्तन होती हैं
4.	चालू खाता	इसके साथ चालू खाता खोला जाता है ।	इसके साथ चालू खाता खोलने की आवश्यकता नहीं होती हैं ।

अथवा

लाभ हानि नियोजन खाता

(वर्ष 31 दिस. 2007 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये)

Dr. **Cr.**

विवरण	राशि	विवरण	राशि
ऋण पर ब्याज खाता से $(4000 \times \frac{6}{100} \times \frac{4}{12})$	80	शेष लाया गया	4000
पूंजी खाता से (शुद्ध लाभ) अ 1960 ब 1960	3920		
	4000		4000

उत्तर – 7 साधारण अंश एवं पूर्वाधिकार अंश में अन्तर (4)

	अन्तर का आधार	साधारण अंश	पूर्वाधिकार अंश
1	अंश की राशि	साधारण अंश की राशि कम होतीं हैं	पूर्वाधिकार अंश की राशि सामान्यतः साधारण अंश की राशि से अधिक होतीं हैं ।
2.	लाभांश की दर	साधारण अंश पर लाभांश की दर अनिश्चित होतीं हैं।	पूर्वाधिकार अंश पर लाभांश की दर निश्चित रहतीं हैं ।
3.	लाभांश की प्राथमिकता	साधारण अंश पर लाभांश पूर्वाधिकार अंश पर दिये जाने के पश्चात् मिलता हैं।	पूर्वाधिकार अंश पर लाभांश साधारण अंश से पहले मिलता है ।
4.	पूंजी की वापसी	कम्पनी के समापन पर साधारण अंश की राशि सबके पश्चात् वापिस की जातीं हैं ।	पूर्वाधिकार अंश की राशि साधारण अंश की राशि से पहले वापिस की जातीं हैं ।

अथवा

पंजी प्रविष्टियां :

दिनांक	विवरण	खाता पृ.क्र.	राशि नाम	राशि जमा
–	बैंक खाता नामें समता अंश धारी खाता से (15000 समता अंश 10 रू. प्रति अंश की दर से प्राप्त)		1,50,000 –	– 1,50,000
–	समता अंश धारी खाता नामे समता अंश पूंजी खाता से (समता अंशपूंजी खाता में राशि अन्तरित)		1,50,000 –	– 1,50,000
			3,00,000	3,00,000

उत्तर–8 सुरक्षित ऋण पत्र :– जिन ऋण पत्रों का निर्गमन करने के लिये कम्पनी की सम्पत्ति पर भार या बन्धक रखी है उन ऋण पत्रों को सुरक्षित ऋण पत्र कहते हैं । यदि कम्पनी इन ऋण पत्रों का भुगतान नहीं कर सकती है तो ऋण पत्र धारी बन्धक रखी सम्पत्ति का विक्रय कर ऋण पत्र की राशि वसूल कर सकती है । यह ऋण पत्र सुरक्षित रहते हैं ।

असुरक्षित ऋण पत्र :– इन ऋण पत्रों के निर्गमन के लिये कम्पनी किसी सम्पत्ति को बन्धक नहीं रखती हैं । ऋण पत्र की राशि वसूल करने के लिये कोई प्रतिभूति नहीं रहती है । यह ऋण पत्र असुरक्षित रहते हैं । (4)

अथवा

पंजी प्रविष्टियां :

दिनांक	विवरण	खाता पृ.क्र.	राशि नाम	राशि जमा
–	बैंक खाता नामें ऋणपत्र धारी खाता से (ऋण पत्र पर राशि प्राप्त 4000, 12% ऋण पत्र प्रत्येक 100 रू. 10% प्रीमियम पर)		4,40,000 –	– 4,40,000
–	ऋण पत्र धारी खाता नामे 12% ऋण पत्र खाता से 12% ऋण पत्र प्रीमियम खाता से (ऋण पत्र खाता में राशि अन्तरित)		4,40,000 –	– 4,00,000 40,000
			8,80,000	8,80,000

उत्तर–9 वित्तीय विश्लेषण के उद्देश्य निम्नलिखित होते हैं । (4)

(1) वित्तीय स्थिति की जानकारी :– वित्तीय विश्लेषण से व्यवसाय की वित्तीय सूचना की जानकारी मिलती है । इसी के आधार पर व्यवसाय में अन्य पक्षकार विनियोग करते हैं ।

(2) उपार्जन क्षमता की जानकारी :– व्यवसाय में लाभ उपार्जन की क्षमता भविष्य में ठीक या नही यह जानकारी प्राप्त होती हैं ।

(3) शोधन क्षमता की जानकारी :– वित्तीय विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि व्यवसाय के दायित्वों का भुगतान सरलता से हो सकता है या नहीं हो सकता है ।

(4) तुलनात्मक अध्ययन :– वित्तीय विश्लेषण से गत वर्षो के आकड़ो से वित्तीय स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है ।

अथवा

तरलता का अनुपात :– अल्पकालीन वित्तीय स्थिति की सुदृढ़ता की जानकारी के लिये जो अनुपात ज्ञात किया जाता है उसे तरलता का अनुपात कहते हैं । अल्पकालीन दायित्वों के भुगतान की क्षमता के लिये इसकी गणना की जाती हैं । तरलता के अनुपात के अन्तर्गत निम्नलिखित अनुपात आते हैं :–

1. चालू अनुपात
2. तरल अनुपात
3. अधि तरलता अनुपात

उत्तर– 10 रोकड़ प्रवाह विवरण का अर्थ :– रोकड़ प्रवाह विवरण से आशय है कि किसी व्यावसायिक संस्था में एक निश्चित अवधि के अन्तर्गत अन्दर एवं बाहर रोकड़ की गति या प्रवाह को दर्शाता हैं । इससे यह जानकारी स्पष्ट होती हैं कि व्यवसाय ने किन स्त्रोतों से रोकड़ प्राप्त की है तथा रोकड़ का उपयोग किन मदों में किया है । रोकड़ के अन्तर्गत हस्तस्थ रोकड़ एवं बैंक शेष सम्मिलित रहता हैं । (4)

अथवा

रोकड़ के स्त्रोत की विभिन्न मदें :– रोकड़ स्त्रोत के अन्तर्गत निम्न मदें होती हैं :–

1. व्यवसाय से प्राप्त रोकड़
2. अंश एवं ऋण पत्र के निर्गमन से प्रापत रोकड़
3. सम्पत्ति के विक्रय से प्राप्त रोकड़

4 ब्याज एवं लाभांश से प्राप्त रोकड़

5. देनदार या प्राप्य विपत्र से प्राप्त रोकड़

उत्तर –11 सचिन ड्रग हाउस, मुम्बई (प्रेषक) की पुस्तकों में (5)

कोलकत्ता प्रेषण खाता, (Consignment A/c)

नामे जमा

दि.	विवरण	राशि	दि.	विवरण	राशि
–	माल प्रेषित खाता से	7000	–	असामान्य हानि खाता को	1100
–	रोकड़ खाते से (व्यय)	700		(7000 + 700 $\frac{7700 \times 5}{35}$)	
–	सौरभ ड्रग हाउस से				
	व्यय 420		–	सौरभ ड्रग हाउस को	7500
	विक्रय व्यय 600			(विक्रय)	
	कमीशन <u>375</u>	1395	–	प्रेषण स्कन्ध खाता को	1170
–	लाभ हानि खाता से	675			
		9770			9770

असामान्य हानि खाता (Alanormal Loss A/c)

दि.	विवरण	राशि	दि.	विवरण	राशि
–	कोलकत्ता प्रेषण खाता से	1100	–	रोकड़ खाता को	1000
			–	लाभ हानि खाता को	100
		1100			1100

प्रेषण स्कन्ध की गणना

1. 5 शेष पेटी की लागत $= \frac{7000}{35} \times \frac{5}{1} = 1000$
2. 5 शेष पेटी पर प्रेषक के व्यय $= \frac{700}{35} \times \frac{5}{1} = 100$
3. 5 शेष पेटी पर प्रतिनिधि के व्यय $= \frac{420}{35} \times \frac{5}{1} = 70$

1,170

अथवा

प्रेषक भेजे गये माल को लागत की गोपनीयता बनाये रखने एवं प्रतिनिधि को माल के विक्रय मूल्य निश्चय करने में सहायता के लिये बीजक मूल्य पर माल प्रतिनिधि को भेजता है । बीजक मूल्य लागत मूल्य से अधिक रहता है । इसमें अनुमानित लाभ एवं व्यय सम्मिलित रहते हैं ।

यदि दर्शनार्थ बीजक मूल्य पर माल भेजा जाता है तो प्रेषक के यहां अपने यहां निम्नलिखित समायोजन प्रविष्टि की जाती हैं –

1. माल भेजने पर :–

Goods sent on consignment a/c Dr.
To Consrgnment a/c
(Being adjustiment of excess value)

माल प्रेषित खाता नामे
प्रेषण खाता से
(अधिक मूल्य का समायोजन)

प्रेषण स्कन्ध सम्बन्धित समायोजन लेखा :–

Consignment a/c Dr.
To Consrgnment Stock suspense a/c
(Being Excess of excess value)

प्रेषण खाता नामे
प्रेषण स्कन्ध उचन्त खाता से
(प्रेषण स्कन्ध में अधिक मूल्य का समायोजन)

उत्तर– 12 अधिलाभ विधि द्वारा ख्याति की गणना :– (5)

औसत लाभ = $\frac{10000 + 6000 + 12000 + 18000}{4}$

औसत लाभ = $\frac{46000}{4}$ = 11500

सामान्य लाभ = पूंजी x सामान्य लाभ की दर

सामान्य लाभ = 60000 x $\frac{12}{100}$ = 7200

अधिलाभ	=	औसत लाभ	–	सामान्य लाभ
अधिलाभ	=	11500	–	7200 =
अधिलाभ	=	4300		
ख्याति	=	अधिलाभ	x	3
ख्याति	=	4300	x	3
ख्याति	=	12,900		

अथवा

फर्म का पुनर्गठन निम्नलिखित दशाओं में होता हैं :–

1. फर्म में किसी नये साझेदार के प्रवेश करने पर ।
2. फर्म से किसी किसी साझेगदार के अवकाश ग्रहरण करने पर
3. किसी साझेदार की मृत्यु होने पर ।
4. फर्म का किसी अन्य फर्म में विलीन होने पर ।
5. साझेदारों का आपस में लाभ हानि के अनुपात में परिवर्तन होने पर ।

प्रश्न– 13 पुर्नमूल्यांकन खाता (Revaluation A/c) (5)

(दिनांक 31 दिसम्बर 2007 की स्थिति में)

नामें जमा

विवरण	राशि	विवरण	राशि
फर्नीचर खाता से	400	भवन खाता को	2500
यंत्र खाता से	1000	पूंजी खाता को (हानि)	
संदिग्ध ऋण संचिति खाता से	1200	अ. 50	
		ब 50	100
	2600		2600

पूंजी खाता (Capital A/c)

नामे   जमा

दि.	विवरण	अ	ब	स	दि.	विवरण	अ	ब	स
2007 31 दिस.	पूर्नमूल्यांकन खाता से	50	50	–	2007 31 दिस.	शेष लाया गया	20000	15000	–
	शेष ले जाया गया	27950	22950	12000	–''–	रोकड़ खाता को	–	–	12000
					–''–	ख्याति खाता को	5000	5000	–
					–''–	सामान्य संचय	3000	3000	–
		28000	23000	12000			28000	23000	12000

अथवा

फर्म से अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार को देय राशि की गणना निम्नलिखित प्रकार से की जाती हैं ।

1. अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार को निम्न राशि भुगतान की जाती हैं :–
    1. पूंजी खाता एवं चालू खाता का जमा शेष की राशि ।
    2. अवकाश ग्रहण की तिथि तक पूंजी पर ब्याज ।
    3. फर्म की ख्याति में अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार के भाग की राशि
    4. संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी के भाग की राशि ।
    5. साझेदार का वेतन एवं कमीशन की राशि ।
    6. अवकाश ग्रहण की तिथि तक फर्म के लाभ में साझेदार के भाग की राशि
    7. पूर्नमूल्यांकन खाता के लाभ में भाग की राशि
    8. अविभाजित लाभ एवं सामान्य संचय के भाग की राशि ।
    9. साझेदार के ऋण एवं उस पर ब्याज की राशि ।
2. अवकाश ग्रहण करने वाले साझेदार से निम्न राशि वसूल होती हैं –
    1. साझेदार का आहरण एवं उस पर ब्याज
    2. अविभाजित हानि के भाग की राशि
    3. पूर्नमूल्यांकन खाता के हानि में भाग की राशि
    4. साझेदार को दिया गया ऋण एवं अग्रिम की राशि ।

उत्तर– 14 पंजी प्रविष्टियाँ (Journal) :– (5)

–	बैंक खाता नामे		250000	–
	अंश आवेदन खाता से		–	250000
	(5000 समता अंश पर प्रति अंश 50 रू. आवेदन राशि प्राप्त)			
–	अंश आवेदन खाता नामें		250000	–
	समता अंश पूंजी खाता से		–	250000
	(अंश आवेदन राशि अंश पूंजी खाता में अन्तरित)			
–	अंश आवंटन खाता नामें		300000	–
	समता अंश पूंजी खाता से		–	250000
	अंश प्रीमियम खाता से		–	50000
	(अंश आवंटन राशि मंगवायी)			
–	बैंक खाता नामें		300000	–
	अंश आवंटन खाता से		–	300000
	(अंश आवंटन राशि प्राप्त)			

अथवा

यदि कोई अंशधारी अंशों पर की गयी याचनाओं का भुगतान निश्चित अवधि के अन्दर जमा नहीं करता है तो कम्पनी उसके अंशों को जब्त कर लेती हैं । उसके अंश निरस्त कर कम्पनी की सदस्यता से अलग कर देती है । इसे अंशों का जब्त करना कहते हैं ।

अंशों के हरण के लिये निम्नलिखित कार्यवाही कम्पनी द्वारा की जाती हैं:–

1. सचिव ऐसे अंशधारी की सूची तैयार कर संचालन मण्डल को प्रस्तुत करता है जिन्होनें याचना का भुगतान नहीं किया हैं ।

2. संचालक मण्डल ऐसे अंश धारी को ब्याज सहित राशि भुगतान करने के लिये सूचना भेजने का प्रस्ताव पारित करता है । सूचना की अवधि 14 दिवस की होती हैं ।

3. यदि इस प्रकार की सूचना के पश्चात् भी अंशधारी याचना का भुगतान नही करता है तो इस प्रकार के अंशो का हरण कर लिया जाता है । कम्पनी अंश के हरण एवं अंश पत्र वापिस करने की सूचना अंशधारी को दे देती हैं ।

प्रश्न– 15 कम्पनी की अशं पूंजी का विभाजन निम्न प्रकार से होता है :– (5)

(1) अधिकृत अंश पूंजी :– यह कम्पनी की अधिकतम अंश पूंजी होती हैं इसका उल्लेख कम्पनी के पार्षद सीमा नियम में होता है । इससे कम्पनी का समामेलन होता हैं अतः उसे पंजीकृत अंश पूंजी भी कहते हैं ।

(2) निर्गमित अंश पूंजी :– अधिकृत अंश पूंजी का वह भाग जो जनता के समक्ष बेचने के लिये प्रस्तुत करते है उसे निर्गमित अंश पूंजी कहते हैं ।

(3) प्रार्थिक अंश पूंजी :– निर्गमित अंश पूंजी का वह भाग जो जनता द्वारा लिये जाने के लिये आवेदन करती है उसे प्रार्थिक अंश पूंजी कहते हैं ।

(4) याचित अंश पूंजी :– प्रार्थिक अंश पूंजी का जो भाग कम्पनी जनता से मंगवाती है उसे याचित अंश पूंजी कहते हैं ।

(5) प्रदत्त या चुकता अंश पूंजी :– याचित अंश पूंजी का जो भाग जनता के द्वारा भुगतान कर दिया जाता हैं उसे चुकता अंश पूंजी कहते हैं ।

(6) संचित अंश पूंजी :– यदि निर्गमित अंश पूंजी का जो भाग अंशधारी से नहीं मंगवाते है उसको विघटन के समय मंगवाने के सुरक्षित रखा जाता है उसे संचित अंश पूंजी कहते हैं ।

अथवा

कम्पनी के चालू दायित्व एवं आयोजन में निम्नलिखित मदें सम्मिलित हैं :

चालू दायित्वः– 1. स्वीकृतियाँ

2. विविध लेनदार

3. अयाचित लांभाश

4. अन्य दायित्व

5. अदत्त ब्याज

6. सहायक कम्पनीं के ऋण

7. अग्रिम प्राप्तियां

आयोजन :– 1. कर हेतु आयोजन

2. प्रस्तावित लाभांश

3. भविष्य निधि

4. पेंशन एवं ग्रेच्यूटीं

5. आकस्मिक संचय

उत्तर– 16 वसूलीं खाता एवं पुर्नमूल्यांकन खाता में अन्तर (6)

अन्तर का आधार	वसूलीं खाता	पुर्नमूल्यांकन खाता
1 बनाने का समय	वसूलीं खाता फर्म के समापन पर बनाया जाता हैं ।	पुर्नमूल्याकन खाता साझेदार के प्रवेश, अवकाश ग्रहण या मृत्यु के समय बनाया जाता हैं ।
2. उद्देश्य	वसूलीं खाता बनाने का उद्देश्य सम्पत्ति का विक्रय कर दायित्वों का भुगतान करना होता हैं ।	पुर्नमूल्यांकन खाता बनाने का उद्देश्य सम्पत्ति और दायित्व के मूल्य में परिंवर्तन की राशि सहीं रूप से ज्ञात करना होता हैं ।
3 मदों	इसमें समस्त सम्पत्ति जो विक्रय योग्य एवं जिनसे राशि प्राप्त होतीं है उनको लिखा जाता हैं तथा बाह्रय दायित्वों का लेखा किया जाता हैं ।	इसमें केवल उन सम्पत्ति एवं दायित्व के अन्तर कीं राशि लिखीं जातीं है जिनके मूल्य में परिंवर्तन होता है ।
4. प्रभाव	वसूलीं खाता बनाने के पश्चात् फर्म के खाते बन्द हो जाते है एवं व्यापार बन्द हो जाता हैं ।	पुर्नमूल्यांकन खाता बनाने के पश्चात् फर्म के खाते बन्द नहीं होते हैं । व्यवसाय चालू रहता हैं ।

अथवा

वसूली खाता (Realisation a/c)

(दिनांक 31 दिस. की स्थिति में)

नामें   जमा

विवरण	राशि	विवरण	राशि
देनदार खाते से	13000	लेनदार खाता को	10000
विविध सम्पत्तियां खाते से	68000	रोकड़ खाता को	
ख्याति खाता से	5000	ख्याति 6000	
रोकड़ खाता से		विविध सम्पतियां 63000	
लेनदार 9500		देनदार 8000	77000
समापन व्यय 500	10000	पूंजी खाता को (हानि)	
		अ 4500	
		ब 4500	9000
	96000		96000

उत्तर – 17 यदि अंशों को अंकित मूल्य या सम मूल्य से कम पर निर्गमित किया जाता है तो इसे अंशों का बट्टा पर निर्गमन कहते हैं । (6)

कम्पनी अधिनियम के अन्तर्गत अंशों का बट्टा पर निर्गमन के लिये निम्नलिखित नियम हैं :–

(1) जिन अंशों को पूर्व में सम या प्रीमियम पर निर्गमन किये थे वे अंश जनता ने नहीं लिये हैं उन अंशों को बट्टा पर निर्गमन किया जा सकता है ।

(2) अंशों पर दिया जाने वाला बट्टा अंकित मूल्य से 10% से अधिक नहीं होना चाहिए ।

(3) यदि हरन किये गये अंशों को बट्टा पर पुर्ननिर्गमन किया जाना है तो बट्टा की राशि जब्त राशि से अधिक नहीं होना चाहिए ।

अथवा

पंजी प्रविष्टियॉ (Journal) :–

दिनांक	विवरण	खाता पृ.सं.	राशि नामे	राशि जमा
–	समता अंश पूंजी खाता नामे		1000	–
	अंश याचना खाता से		–	600
	अंश हरण खाता से		–	400
	(100 समता अंश प्रत्येक 10 रू. वाले हरण किये गये)			
–	बैंक खाता नामें		300	–
	अंश हरण खाता नामें		100	–
	समता अंश पूंजी खाता से		–	400
	(40 समता अंश 10 रू. वाले पुर्ननिर्गमित)			
–	अंश हरण खाता नामें		60	–
	अंश पूंजी संचय खाता से		–	60
	(अंश हरण शेष राशि का पूंजी संचय खाता में अन्तरण)			

40 पुर्ननिर्गमित अंश पर

बट्टा 400 – 300 = 100 रू.

40 हरण अंश पर जप्त राशि $= \frac{400}{100} \times \frac{40}{1} = 160$ रू.

जप्त राशि 160 – बट्टा 100 = 60 रू. पूंजी संचय

उत्तर– 18 ऋण पत्रों की विशेषतायें :– (6)

(1) ऋण पत्र कम्पनी के द्वारा लिये गये ऋण का निश्चित मूल्य का भाग होता हैं ।

(2) ऋण पत्र का मूल्य निश्चित रहता है जो ऋण पत्र में अंकित रहता है ।

(3) ऋण पत्र पर ब्याज की दर निश्चित रहती हैं ।

(4) ऋण पत्र की राशि निश्चित अवधि के पश्चात् वापिस की जाती हैं ।

(5) ऋण पत्र पर कम्पनी की मुख्य शर्ते अंकित रहती है ।

(6) ऋण पत्र कम्पनी के द्वारा लिये गये ऋण का लिखित प्रमाण हैं ।

(7) ऋण पत्र का धारक कम्पनी का ऋणदाता होता है, उसे मताधिकार प्राप्त नहीं हैं ।

अथवा

पंजी प्रविष्टियॉ (Journal) :–

दिनांक	विवरण	खाता पृ.सं.	राशि नामे	राशि जमा
–	बैंक खाता नामे		150000	–
	10% ऋण पत्र आवेदन खाता से		–	150000
	(5000 ऋण पत्र पर 30रू. प्रति ऋण पत्र आवेदन राशि प्राप्त)			
–	10% ऋण पत्र आवेदन खाता नामें		150000	–
	10% ऋण पत्र खाता से		–	150000
	(ऋण पत्र आवेदन राशि ऋण पत्र खाता में अन्तरित)			
–	10% ऋण पत्र आवंटन खाता नामें		325000	–
	ऋण पत्र बट्टा खाता नामें		25000	–
	10% ऋण पत्र खाता से			350000
	(ऋण पत्र आवंटन राशि देय)			
	बैंक खाता नामें		325000	–
	10% ऋण पत्र आवंटन खाता से		–	325000
	(ऋण पत्र आवंटन राशि प्राप्त)			
	योग		975000	975000

उत्तर 19 अनुपात विश्लेषण के उद्देश्यः– (6)

(1) लाभदायकता की माप ज्ञात करना – अनुपात विश्लेषण से लाभ अर्जन की क्षमता ज्ञात होतीं हैं ।

(2) व्यवसाय के संचालन को क्षमता की जॉच – इससे संचालन संबंधी व्यय एवं लागत की जानकारी मिलती हैं ।

(3) शोधन क्षमता की जानकारी – अनुपात विश्लेषण से अल्प कालीन एवं दीर्घकालीन ऋणों के भुगतान की क्षमता ज्ञात होतीं हैं ।

(4) वित्तीय पूर्वानुमान एवं नियोजन :– लेखांकन अनुपात ज्ञात कर वित्तीय आवश्यकता का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है । व्यवसाय की प्रवृत्ति के आधार पर वित्तीय योजना बनायी जातीं हैं ।

(5) तुलनात्मक अध्ययन में सरलता– अनुपात विश्लेषण से आपस में गत वर्षो की तुलना एवं अन्य फर्मो से तुलना किया जा सकता है ।

(6) वित्तीय स्थिति का विश्लेषण :– अनुपात विश्लेषण से वित्तीय स्थिति की जानकारी प्राप्त कर व्यवसाय सम्बन्धी निर्णय लेने में सुविधा होतीं हैं ।

अथवा

शुद्ध विक्रय	=	सकल विक्रय	–	विक्रय वापसी		
,,		450000	–	25000		
शुद्ध विक्रय	=	425000				
सकल लाभ	=	शुद्ध लाभ	+	अप्रत्यक्ष व्यय	+	ब्याज
,,	=	95000	+	25000	+	5000
सकल	=	1,25,000				

सकल लाभ अनुपात $= \frac{\text{सकल लाभ}}{\text{विक्रय}} \times 100$

$= \frac{125000}{} \times 100$

425000

सकल लाभ अनुपात = 29.41%

उत्तर– 20 रोकड़ प्रवाह विश्लेषण के उद्‌देश्य – (6)

(1) रोकड़ स्थिति का विश्लेषण – रोकड़ प्रवाह विश्लेषण के द्वारा रोकड़ के प्राप्ति एवं उसके उपयोग की जानकारी मिलतीं हैं ।

(2) नीतियों का निर्माण – रोकड़ प्रवाह विश्लेषण के द्वारा व्यवसाय को नीतियों का निर्माण किया जाता है । दायित्वों का भुगतान, लाभांश का भुगतान व्यवसाय के विकास की नीति बनायीं जा सकतीं हैं ।

(3) तरलता की जॉच – व्यवसाय के ऋण , लेनदार एवं अग्रिम देने संबंधी तरलता की जॉच हो सकतीं है । ऋण भुगतान क्षमता ज्ञात हो सकतीं हैं ।

(4) रोकड़ नियोजन को जानकारी – रोकड़ प्रवाह विश्लेषण के द्वारा रोकड़ की कमीं एवं आधिक्य की जानकारी प्राप्त हो सकतीं है । यदि रोकड़ का आधिक्य है तो उसके उपयोग के विषय में योजना बनायीं जा सकतीं हैं ।

(5) भावी रोकड़ बहाव का अनुमान – रोकड़ प्रभाव विश्लेषण के द्वारा भविष्य में रोकड़ की अनुमानित प्राप्ति तथा उपयोग की जानकारी प्राप्त की जा सकतीं हैं । इससे बजट निर्माण में सहयोग मिलता हैं ।

अथवा

संचालन से रोकड़ की गणना –

	शुद्ध लाभ =	(200000 – 100000)	=	100000
(+)	ह्रास भवन	60000		70000
	मशीनरी	10000		
(+)	देनदार में कमी (30000 – 28000)			2000

				1,72,000
(–)	स्टाक में वृद्धि (76000 – 55000)	=	21000	
(–)	लेनदार में कमीं (40000 – 30000)	=	10000	
(–)	देय विपत्र में कमीं (5000 – 4000)	=	1000	– 32000

	संचालन से रोकड़			1,40,000